Covid-19 का शिक्षा पर प्रभाव तथा भविष्य में शिक्षा की स्थिति

अजय कुमार

शोद्यार्थी
आईएफटीएम विष्वविद्यालय मुरादावाद

सार (Abstract):

प्रस्तुत शोध पत्र के दौरान शिक्षा की वर्तमान स्थिति तथा इसका प्रभाव, भविष्य में षिक्षा की स्थिति आदि को स्पष्ट करने के उद्देष्य से प्रस्तुत किया जा रहा है। Covid-19 महामारी से शिक्षा के नतीजे बेहद खराब आने का खतरा उत्पन्न हो गया है, कोई अक्रामक नीति नही अपनाई गई तो इसका बच्चों तथा युवाओं के शिक्षण और स्वास्थ्य पर बहुत जल्द बुरा प्रभाव तथा भविष्य में होने वाली स्थिति को स्पष्ट करना है। महामारी का शिक्षा पर पहले से ही गहरा प्रभाव पड़ा है क्योंकि दुनिया में लगभग सभी स्कूल बंद है, यह हमारे जीवनकाल में सभी षिक्षा प्रणालियों के लिए सबसे बड़ा झटका है। ऐसे में यह देखना जरूरी है कि आज कोरोना संकट के दौर में ऑनलाइन षिक्षा के जरिए षिक्षा के स्वरूप मे बदलाव का प्रस्ताव नीति निर्धारिको के द्वारा पुरजोर तरीक से रखा जा रहा है। इस शोध पत्र में षिक्षा की वर्तमान स्थिति को देखते हुए भविष्य में षिक्षा की स्थिति शोध पत्र में दर्षाया गया है।

Keywords: Covid-19, smart phone, computer data,समाजीकरण

परिचय (Introduction)

शिक्षा अपने मूल में समाजीकरण की एक प्रक्रिया है, जब–जब समाज का स्वरूप बदला शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन की बात हुई, आज कोरोना संकट के दौर में आनलाइन शिक्षा का महत्व भी बढ़ा है। Covid-19 के कारण स्कूलो, कॉलेजों एवं शैक्षणिक संस्थानों के बंद होने से दुनिया के 191 देशों में 157 करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हो गई है जो विभिन्न स्तरों पर दाखिला लेने वाले कुल छात्रों का 91-3% है यह जानकारी संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के अध्ययन में सामने आई है। यूनेस्को के अध्ययन के अनुसार, भारत में Covid-19 की वजह से लॉकडाउन के कारण अनुमानित रूप से 32 करोड़ छात्रो का पठन–पाठन प्रभावित हुआ है जिसमें 15-8% करोड़ लड़कियां और 16-25 करोड़ लड़के शामिल है। ब्वअपक.19 का दौर बीतने के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उभरने वाले आयामों पर किए गए अध्ययन में कहा गया"Covid-19 महामारी के कारण डिजिटल माध्यम से अधिक मात्रा में लोग पढ़ाई कर रहे और कम अवधि वाले पाठ्यक्रम भी लोकप्रिय हो रहे है इन बदलावों से कठिनाई तो हो रही है लेकिन इनसे शिक्षा के नवाचार के उदा0 भी सामने आ रहे, दससे यह संकेत मिलता है कि शैक्षणिक जगत में डिजिटल माध्यम का प्रभाव लंबे समय तक रहने वाला है।"स्कूल और कॉलेजों में पढ़ाई करने के लिए डिजिटल माध्यम का प्रयोग भविष्य में और अधिक किया जाएगा।

वर्तमान में षिक्षा की स्थिति :–Covid-19 से संक्रमितों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, विश्व का शायद ही कोई देश हो जो इस महामारी के प्रकोप से बचा हो, तमाम अनुमानों के बावजूद इससे लड़ने में सभी देशों की अक्षमता लगातार सामने आ रही है। यह समय हमें बताता है कि एक समुदाय के रूप में हमें अपने कुछ विषयों में आत्मनिर्भरता बनाने की आवश्यकता है। हम अपने प्रत्येक आवश्यकता के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रह सकते है। जहाँ Covid-19 का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिल रहा है वहीं शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावित किया है। वर्तमान में शिक्षा की स्थिति स्कूलों से लेकर उच्च स्तरीय शिक्षा लगभग सभी को ठप किया है। हालांकि कुछ स्कूल या कॉलेज या विश्वविद्यालयों ने जूम (Zoom), गूगल क्लासरूमा (Google Classroom), माइक्रोसॉफ्ट टीम (Microsoft Team), स्काइप (skype) जैसे प्लेटफॉर्मो के साथ–साथ यूट्यूब (Youtube), ब्हाट्सअप (whstsapp) आदि के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण का विकल्प अपनाया है, जो इसमें एकमात्र रास्ता है, लेकिन इस ऑनलाइन शिक्षा का कुछ हलकों में इस प्रकार से महिमामंडन किया जा रहा है, मानो हमारी शिक्षा व्यवस्था की हर समस्या का समाधान इसमें छिपा हुआ है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय Covid-19 के बढ़ते खतरे को देखते हुए इस शैक्षणिक सत्र (2020–21) के पाठ्यक्रम और स्कूल के घंटे घटाने पर विचार किया गया। पाठ्यक्रम कम होना ही चाहिए क्योंकि अभी जिस तरह से ऑनलाइन

क्लासेस हो रही है, उस तरह से पूरा सिलेबस कर पाना मुष्किल है जिस चैप्टर को कराने में दो दिन लगते थे ऑनलाइन क्लासेस में वही चैप्टर चार–पांच दिन में हो रहे है।

भारतीय चिंतन परम्परा के अनुसार शिक्षा के तीन प्रमुख उद्देश्य है, व्यक्ति एवं चरित्र निर्माण, समाज कल्याण और ज्ञान का उत्तरांत्तर विकास। इन लक्ष्यों की पूर्ति कहां तक करती है इसकी परख की भी आवश्यकता है। यह Covid-19 संकट की तत्कालिक समस्या से उपजी परिस्थिति है,smart phone, computer data आदि की लागत और क्लासरूम शिक्षा की लागत का अंतर अगर देखें तो समझ आ जाएगा कि इसी तर्क का इस्तेमाल कर दलित पिछड़े बालकों को गुणतत्तापूर्ण शिक्षा से बाहर किया जा रहा है। उन्हें Online Education की तरफ धकेला जा रहा है। सरकार गरीब दलित पिछड़े बालको को इन तकनीकी सुविधाओं के जरिए ऑनलाइन शिक्षा की विकल्प देने की बात कर रही है उसे ही वे सस्ती शिक्षा और गुणतत्तापूर्ण शिक्षा का नाम दे रहे है। ऑनलाइन क्लासेस की सार्थकता और पहुंच का विश्लेषण किए बिना ही इन्हें शुरू कर दिया गया है, जैसे माता–पिता को दिखाने और अपने स्कूल का नंबर बढ़ाने की कोई होड़ हो।

हॉलाकि, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के इस्तेमाल को पूरी तरह गलत भी नही मानते क्योंकि इतने लंबे समय तक बच्चे को पढ़ाई से दूर रखना भी ठीक नहीं होगा ऐसे में क्लासेस छोटी और दिलचस्प कंटेंट के साथ हो जिससे बच्चे कुछ अच्छी बातें सीख सकें।

Covid-19 का षिक्षा पर भविष्य में प्रभाव :–एक तरफ बच्चे खुष है कि स्कूल बंद होने पर भी उनकी पढ़ाई हो रही है तो दूसरी तरफ ये भी चिंता का विषय है कि उनको चार से पांच घंटे मोबाइल को लेकर बैठना पड़ता है। ऐसे में यह भी सुझाव दिया जाता है कि बच्चों को मोबाइल से दूर रखें लेकिन अभी बच्चे को पढ़ाई के लिए ही मोबाइल इस्तेमाल करना पड़ रहा है, उसके बाद बच्चे टीवी भी देखते है तो बच्चों का स्क्रीन टाइम बढ़ गया है इसका बच्चे की सेहत पर क्या असर होगा।

(1) **स्क्रीन टाइम (Screen Time)** डॉक्टरों का कहना है कि बच्चों को लंबे समय तक मोबाइल या लैपटॉप के संपर्क में रहने से मानसिक और शारीरिक तौर पर असर हो सकता है। स्क्रीन टाइम से आशय है कि बच्चा 24 घण्टों में कितने घंटे मोबाइल टीवी, लैपटॉप और टैबलेट जैसे गैजेट के इस्तेमाल में बिताता है।

(2) **बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव :**–स्क्रीन टाइम के बढ़ने से बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ेगा। कुछ मनोरोग विशेषज्ञ डॉक्टरों का कहना है कि कुछ स्टडीज के मुताबिक अगर बच्चे या किशोर 6 या 7 घंटे से ज्यादा स्क्रीन पर रहते है तो उन पर मनोवैज्ञानिक असर हो सकता है। इससे उनमें आत्मसंयम की कमी, जिज्ञासा में कमी भावात्मक स्थिरता न होना, ध्यान केन्द्रित न कर पाना आदि समस्याओं का भविष्य में सामना करना पड़ सकता है।

यह समझना भी जरूरी है कि ऑनलाइन क्लासेस में जो कुछ भी पढ़ाया जा रहा है बच्चे उसे कितना समझ पा रहे है। जैसे कि सामान्य तौर पर नॉर्मल अटैंषन स्पैन 20–30 मिनट होता है यानी कोई भी व्यक्ति इतनी ही देर तक काम पर अच्छी तरह फोकस कर सकता है।

आँखों पर प्रभाव :–स्क्रीन टाइम के अधिक उपयोग से आँखो पर भी प्रभाव पड़ सकता है। फोन और लैपटॉप के ज्यादा इस्तेमाल से बच्चे की आँखे कितनी सुरक्षित है, किसी भी माता–पिता के दिमाग में ऐसे सवाल आना लाजिमी है। स्क्रीन पर देखने से आँखों में खिचाव जरूरी होता है, जिससे आँखों मे पानी आना, सूखापन, जलन, आँखो में लालपन जैसी दिक्कतें हो सकती है इन परेषानियों का भविष्य में बच्चों को सामना न करना पड़े इसके लिए कुछ सावधानियों को अपनाकर इन दिक्कतों से बच्चों को बचाया जा सकता है।

अमेरिकन अकेडमी ऑफ पीडियाडिक्स ने बच्चों के स्क्रीन टाइम के संबध मे कुछ दिशा निर्देश जारी किए है जिनके मुताबिक–18 महीने से कम उम्र के बच्चे स्क्रीन का इस्तेमाल न करें।

ऑनलाइन सीखना लगभग हर छात्र के अनुभव का हिस्सा बन जाएगाः–जब ऑनलाइन सीखना पहलीबार दृश्य आया तो कई तकनीकी भविश्यवादियों ने भविश्यवाणी की कि यह सभी पारंपरिक शिक्षण का अंत होगा, अब चूँकि इसने पारंपरिक शिक्षण को बदल दिया है, यद्यपि अस्थायी रूप से दुनिया के कई हिस्सों में, कई लोग साझा दर्द बिन्दुओं और कुंठाओ को प्रमाण के रूप में इंगित कर रहे है कि यह सब के बाद भी इतनी अच्छी तरह से काम नही करता है, जिस प्रकार आवश्यकता पड़ने पर कक्षाओं को ऑनलाइन शिक्षण में इन Networking घटनाओं और अध्ययन समूहों से लाभ मिल सकता है।

(3) विष्वविद्यालय और कॉलेज अधिक लचीले डिग्री पाठ्यक्रम और समय सारणी प्रदान करेंगे :– Covid-19 सामाजिक आदतो से अधिक वाधित है, आर्थिक टोल कई उद्योगों मे, व्यवसायों और कैरियर मार्ग बदल रहा है और यह प्रभावित करेगा कि शिक्षार्थी अपनी डिग्राी और प्रमाणपत्र के बारे में निर्णय कैसे लेते है। महामारी से पहले भी, कई शिक्षा संस्थान नए समय और पाठ्यक्रम विकल्पों के साथ प्रयोग कर रहे थे।

(4)Covid-19 के बाद तकनीकी शिक्षा पर होगा जोर –: एक तरफ इन बदलावों से कठिनाई तो हो रही है लेकिन इनसे शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के उदाहरण भी सामने आ रहे है। कोरोना वायरस महामारी और उसके कारण लागू लॉकडाउन का दौर बीतने के बाद स्कूल और कॉलेजो को स्थाई तकनीकी अवसंरचना में निवेश करना होगा जिसमें अध्यापकों का प्रशिक्षण डिजिटल वातावरण में काम करने के कौशल पर केन्द्रित होगा और उच्च शिक्षण संस्थानों में परीक्षा पारंपरिक तरीको की जगह ऑनलाइन माध्यम से कराई जाएगी।

Covid-19 का दौर बीतने के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उभरने वाले आयामों पर किए गए अध्ययन में कहा गया, कोविड–19 महामारी के कारण डिजिटल माध्यम से अधिक मात्रा में लोग पढ़ाई कर रहे है और कम अवधि वाले पाठ्यक्रमि भी लोकप्रिय हो रहे है। इन बदलावों से कठिनाई तो हो रही है लेकिन इनसे शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के उदाहरण भी देखने को मिले है इससे यह संकेत मिलता है कि शैक्षणिक जगत में डिजिटल माध्यम का प्रभाव लंबे समय तक रहने वाला है।

2025 में षिक्षा की व्यवस्था करना :– न केवल दुनिया एक महामारी का सामना कर रही है, बल्कि इस समय हम अपने समाज के हर उद्योग और पहलू को डिजिटल बनाने के बीच में है। इसका मतलब है कि हमारे जीवन के कई हिस्से जो कभी अलग हुआ करते थे अब अभिसरण होगें। महामारी बस अब प्रक्रिया को तेज कर रही है। छात्रो, शिक्षकों, स्टार्ट अप, कॉपर्रेट भागीदारो के हमारे समुदाय में लाने और कर्मचारियों की कल्पना करने की शिक्षा के भविष्य 2025 में नेतृत्व की दृष्टि है जो हम के रूप में प्रकाशित एक मुफ्त डाउनलॉड करने योग्य ग्राफिक उपन्यास एक ऐसी दुनिया को रेखांकित करता है जहां सीखने, काम करने और पारंपरिक जीवन का गहरा एकीकरण है।

निष्कर्ष (Conclusion)

हम जानते है कि एक डिजिटल भविष्य में, हम शिक्षा को संयोजित करेंगे और नए तरीको से काम करेंगे तो हम इस संक्रमण का बोझ उठाने के लिए छात्रों और कर्मचारियों पर भरोसा नहीं कर सकते है, हमारी कंपनियों और शैक्षिक प्रणालियों को भी बदलना होगा। अब हम सभी के लिए समय है कि हम जिस भविष्य में रहना चाहते है उसकी पुनः कल्पना करे और उसका निर्माण शुरू करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. Kaw, M. Hess (2007). Comparing Effectiveness of Instructional Delivery Modalities in an Engineering Course Autar Kaw and Melinda Hess, International Journal of Engineering Education, Vol. 23, No. 3, pp. 508-516
2. ACRL Information Literacy Best Practices Committee (2012), Characteristics of programs of information literacy that illustrate best practices: A guideline. College & Research Libraries News, 73(6), 355-359. Retrieved from http://crln.acrl.org/content/73/6/355.full.pdf+html
3. गिडेंस, एंथोनी (1990)।आधुनिकताकेपरिणाम।स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्डयूनिवर्सिटीप्रेस।
4. Bates, Anthony, (1982). Roles and characteristics of television and some implications for distance learning. Distance Education, 3, 1, pp. 29-50.
5. Abbate, Janet. Inventing the Internet. Cambridge, Mass., 1999.
6. Adam, Alison. Artificial Knowing: Gender and the Thinking Machine. London, 1998.
7. Adas, Michael. Machines as the Measure of Men: Science, Technology, and Ideologies of Western Dominance. Ithaca, 1989.
8. Birke, Lynda. Feminism and the Biological Body. New Brunkswick, N.J., 2000.
9. Bray, Francesca. Technology and Gender: Fabrics of Power in Late Imperial China. Berkeley. 1997.
10. Caro, Robert A. The Power Broker: Robert Moses and the Fall of New York. New York, 1974.
11. Chandler, Alfred D. Scale and Scope : The Dynamics of Industrial Capitalism. Boston, 1994.